अच्छे स्वास्थ के लिये मन की शांति जरुरी - ब्रह्माकुमारी कमला बहन जी

रायपुर। क्षेत्रीय प्रशासिका एवं शांति सरोवर की निदेशिका ब्रह्माकुमारी कमला बहन जी ने कहा कि अच्छे स्वास्थ के लिये मन की शांति जरुरी है। आध्यात्मिक स्वास्थ्य के बिना सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त नहीं की जा सकता। लोग शारीरिक स्वास्थ्य पर तो पूरा ध्यान देते है किन्तु अपने आध्यात्मिक स्वास्थ्य के प्रति जरा भी जागरुक नहीं होते।

ब्रह्माकुमारी कमला बहन जी पंडित जवाहर लाल नेहरु स्मृति मेडिकल कालेज के प्रिवेन्टिव एण्ड सोशल मेडिसिन विभाग के छात्रों को सम्बोधित कर रही थी। कार्यक्रम का आयोजन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मेडिकल विंग के द्वारा शांति सरोवर में किया गया था। इस अवसर पर प्रिवेन्टिव एण्ड सोशल मेडिसिन विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. मीता जैन भी उपस्थित थी। ब्रह्माकुमारी कमला बहन ने आगे कहा कि किसी व्यक्ति को सिर्फ मरीज समझ कर इलाज न करें वरन उसे आध्यात्मिक दृष्टि से एक परमात्मा के संतान होने के कारण अपने परिवार का सदस्य मानकर इलाज करें। इस प्रकार दवा के साथ-साथ उसे डाक्टर का स्नेह और अपनापन भी मिलने से वह जल्दी ठीक हो जायेगा। उन्होंने चिकित्सा छात्रों को बतलाया कि इलाज करते समय तीन बातों का ध्यान रखें- दया, दवा और दुआ। किसी मरीज को स्वस्थ करने के लिये यह तीनों ही बातें जरुरी होती है।

उन्होंने कहा कि एकमात्र चिकित्सकीय व्यवसाय ही ऐसा व्यवसाय है जिसे सेवा भावना से किया जा सकता है। डॉक्टर को भगवान के समान माना गया है क्योंकि वह भी भगवान की तरह लोगों को जीवन देता है। उन्होंने सभी छात्रों को राजयोग सिखने की सलाह देते हुए कहा कि मानसिक एकाग्रता बढाने से कुशलतापूर्वक इलाज कर सकेंगे और गलतियां भी नहीं होगी। राजयोग से मन की एकाग्रता तो बढती ही है साथ-साथ मन की शांति भी अनुभव कर सकेंगे। इसका सुखद प्रभाव उनके अच्छे व्यवहार के रुप में मरीजों को दिखाई देगा और जीवन में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलेगा।

आध्यात्मिक शक्ति के चमत्कार

आध्यात्मिक शक्ति के चमत्कारों का वर्णन सभी धर्म अथवा वर्ग के लोगों में होता है। सभी धर्म-अनुयायियों में अपने-अपने धर्म संस्थापकों के बारे में अनेक प्रकार के चमत्कारों का वर्णन किया है। ऐसे वर्णन सुनकर भक्त लोग झूम उठते हैं और कई एक की आँखों से तो श्रद्धा प्रेम के आँसू भी बह निकलते हैं।

यदि देखा जाए तो आध्यात्मिक शक्ति के चमत्कार ही किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय की स्थापना और पालना के निमित्त बनते हैं। यदि ऐसे चमत्कारों के वर्णन धार्मिक कथाओं आदि से निकला दिये जायें तो धार्मिकता का विषय फीका बनकर रह जायेगा। यही कारण है कि धार्मिक प्रचार की दौड़ में अलग-अलग धर्म-अनुयायियों ने अपने-अपने धर्म के प्रचार हेतु जो-जो चमत्कार मनुष्य मात्र के सामने रखे हैं वह एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर हैं।

आज के वैज्ञानिक युग में भी जहां कहीं किसी को किसी भी साधु-महात्मा की किसी चमत्कारी क्रिया का पता चलता है, वह वहीं ध्यानयुक्त हो जाता है। आये दिन अखबारों में छपने वाले चमत्कारी किस्से पाठकों की दृष्टि अपनी ओर खींच ही लेते हैं।

आज तक जितनी भी कथा-कहानियां आध्यात्मिक शक्ति के चमत्कारों के विषय में सुनने को मिली हैं, उनकी सत्यता या असत्यता में न जाते हुए हमें यह मानना ही पड़ता है कि भले ही वर्णन असलियत से बढ़ा-चढ़ा दिये गए हों, परंतु आध्यात्मिक शक्ति ही एक वास्तविक शक्ति है और उसके चमत्कार अवश्य ही निराले हैं।

कुछ समय पहले की बात है एक साधु अच्छे काश्मीरी घराने में ठहरा हुआ था और उस परिवार की जान-पहचान के लोग उसे मिलने को आये हुए थे। जिनमें कुछ वैज्ञानिक अधिकारी भी थे। उन वैज्ञानिक अधिकारियों ने साधु से तर्क करते हुए कहा - भारत की आध्यात्मिकता तो एक ढोंग ही है, बाहर के देशों को देखिए, उन्होंने साइंस के चमत्कार की बदौलत कितनी तरक्की की है। साधु ने पूछा - कौन सा चमत्कार दिखलाया है साइंस ने? इस पर एक वैज्ञानिक ने झट से सिनेमा, रेडियो, टेलीफोन इत्यादि की महिमा कर डाली और साधु का मुंह ताकने लगा। साधु ने हल्की सी मुस्कान के साथ उन वैज्ञानिकों को कहा कि दूसरे कमरे में जाकर जो कुछ लिखना चाहें, किसी कापी पर गुप्त में लिखकर वापस आ जायें। वैज्ञानिक भाई दूसरे कमरे में गए और कुछ ही क्षणों में कुछ वैज्ञानिक ढंग की बातें लिखकर आ गये। साधु ने एक कागज लिया और उस पर कुछ लिखकर एक वैज्ञानिक भाई के आगे बढ़ा दिया। वैज्ञानिक की आँखें चमक उठीं और वह 'कमाल है!' के शब्द उच्चारण कर साधु की ओर हैरानी से झांकने लगा। साधु ने हूबहू वही शब्द लिख दिये थे जो यह लोग दूसरे कमरे में जाकर कापी में लिखकर आये थे। साधु ने बड़ी शान से पूछा - बताइये ये कौनसी साइंस का चमत्कार है?

उपर्युक्त कथन से हमारा भावार्थ यह नहीं है कि साइंस का कोई महत्व नहीं या मनुष्य के जीवन का लक्ष्य केवल गुप्त शक्तियां ही प्राप्त करना है बल्कि यह है कि साइंस की शक्ति के विभिन्न रूपों की चकाचौंध में हमें आध्यात्मिक शक्ति के महत्व को भूलना नहीं है। बल्कि यदि गंभीरतापूर्वक विचार किया जाये तो ये ज्ञात होगा कि साइंस की शक्ति को जन्म देने वाली भी वास्तव में आध्यात्मिक शक्ति ही है। क्योंकि साइंस भी मनुष्य आत्मा की ध्यान-शक्ति की ही देन तो है। अब प्रश्न उठता है कि यदि साइंस की शक्ति आध्यात्मिक शक्ति की देन है तो आध्यात्मिक शक्ति के अनेक चमत्कारों में से सर्वोत्तम चमत्कार कौन सा है, उस चमत्कार का प्रत्यक्ष रूप क्या है और उससे मनुष्य-मात्र को प्राप्ति क्या होती है?

इस प्रश्न का उत्तर खोजन से पहले यह जान लेना जरूरी है कि आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति का प्रश्न तभी पैदा होता है जबकि यह शक्ति आत्माओं में न हो। सतयुग और त्रेतायुग में देवी-देवता धर्म की आत्मायें आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न होने के कारण सम्पूर्ण सुखी और शांत होती हैं। इसलिए उन्हें इस शक्ति को प्राप्त करने की जरूरत ही महसूस नहीं होती। द्वापरयुग से जब आत्मायें विकारों के परिणामस्वरूप शक्तिहीन होकर दु:खी और अशांत होने लगती है तभी इस शक्ति की प्राप्ति के लिए खोज शुरू होती है। उसी समय से ऋषि-मुनि और धर्म अथवा मत-स्थापक अपनी-अपनी आध्यात्मिक शक्ति का प्रदर्शन करना आरंभ करते हैं। जिसके फलस्वरूप अनेक धर्मों और मतों की स्थापना होती है। यदि ये विशेष आत्मायें किसी प्रकार के चमत्कार न दिखलायें तो शायद ही कोई उनकी विचारधारा का अनुयायी बन सके। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार किसी ने दिल के राज बता डाले, किसी ने मन की मुरादें पूरी कर डालीं, किसी ने गिरते पहाड़ों को थाम लिया और किसी ने मुर्दों को जिंदा कर दिखाया। परन्तु इन सब चमत्कारों को देख लेने के बाद क्या मनुष्य की प्यास बुझ

शेष पृष्ठ 4पर

राजगामार, कोरबा। सफलता के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण कार्यक्रम के पश्चात ग्रुप फोटो में सबएरिया मेनेजर ए.के.राय, ब्र.कु.दीपा, ब्र.कु.जागृति, जे.एल.शाह, ब्र.कु.राजश्री

सारंगपुर। चैतन्य देवियों की झांकी का दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. मधु बहन एवं अन्य

रतलाम। युवाओं के लिए आयोजित "आध्यत्मिकता से सकारात्मकता" की ओर विषय पर आयोजित एक दिवसीय शिविर के पश्चात ब्र.कु.सविता, ब्र.कु.मधुबाला, ब्र.कु. किशन भाई एवं शिविरार्थी

कालानी नगर। नवरात्रि के अवसर पर माँ दुर्गा की चैतन्य झांकी का उद्घाटन करते हुए विधायक सुदर्शन गुप्ता, युवा नेता संदीप दुबे, ब्र.कु.जयंती बहन एवं अन्य

गीता विहार, इन्दौर। दीपावाली पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्जवलन करते हुए समाज सेवी सास्वत जी, पुर्व डीआईजी पुरुषोत्तम तिवारी, सरपंच श्रीमती सरिता, ब्र.कु.सुमित्रा, ब्र.कु.कुसुम एवं अध्यक्ष नामदेव जी

चिरमिरी-छत्तीस गढ। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए सी.एस.पी. मेघा टेम्मुरकर एवं साथ में ब्र. कु. रमा ।